प्रकृत्यादिभ्य उपसंख्यानम् वा०

प्रकृति (स्वभाव) आदि क्रिया विशेषण शब्दों में तृतीया विभक्ति होती है, यथा-

मोहनः सुखेन जीवति (मोहन सुख से रहता है ।)

प्रकृत्या गवां पयः मधुरम् (स्वभावतः गौओं का दूध मीठा होता है ।)

सः स्वभावेन कोमलः (वह स्वभाव से प्रिय है)।

सहयुक्तेऽप्रधानम् ।२।३।१६।

सह, साकम् , सार्धम् , समम् के साथ वाले शब्दों में तृतीया विभक्ति होती है,

शिष्य: गुरुणा सह विद्यालयं गच्छति ।

रामः जानक्या साकं गच्छति ।

हनुमान् वानरैः साधं जानकीं मार्गयामास ।

अपवर्गे तृतीया

कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे

अपवर्ग या फल प्राप्ति में काल-सातत्यवाची तथा मार्ग-सातत्यवाची शब्दों में तृतीया होती है। जितने समय या मार्ग चलते-चलते कार्य सिद्ध होता है उसमें तृतीया होती है।

यथा- दशभिः वर्षैः अध्ययनं समाप्तम् (दस वर्षों में अध्ययन समाप्त हो गया) अर्थात् दस वर्षों में अध्ययन का फल मिल गया।

द्वादशभिः दिनैः नीरोगः जातः (बारह दिनों में नीरोग हो गया)।

मासेनायम् इमं ग्रन्थं लिखितवान् (एक महीने में इसने यह ग्रन्थ लिख डाला)

क्रोशेन पुस्तकं पठितवान् (एक कोस चलते-चलते पुस्तक पढ़ डाली)।

तुल्यार्थैरतुलोपमाभ्यां तृतीयाऽन्यतरस्याम्

'तुला' तथा 'उपमा' इन दो शब्दों को छोड़कर शेष सब तुल्य (समान बराबर) का अर्थ बताने वाले शब्दों के साथ तृतीया अथवा षष्ठी होती है, यथा-

स देवेन देवस्य वा समानः (वह देव के समान है)।

धर्मण धर्मस्य वा सदृशः (धर्म के समान) ।

न त्वं मया मम वा समं पराक्रमं बिभर्षि (तू मेरे समान पराक्रम नहीं रखता है)।

तुला और उपमा के साथ षष्ठी होती है, यथा-

तुला उपमा वा रामस्य नास्ति ।

यजेः कर्मणः करणसंज्ञा सम्प्रदानस्य च कर्म संज्ञा वा०

यज् धातु के कर्म की करण संज्ञा होती है और सम्प्रदान की कर्म संज्ञा, यथा-

पशुना रुद्रं यजते (भगवान् रुद्र को पशु चढ़ाता है)।